Value Added Workshop Organised by IQAC & Activity Cell, KNIPSS, Sultanpur

Date: 08.02.2023

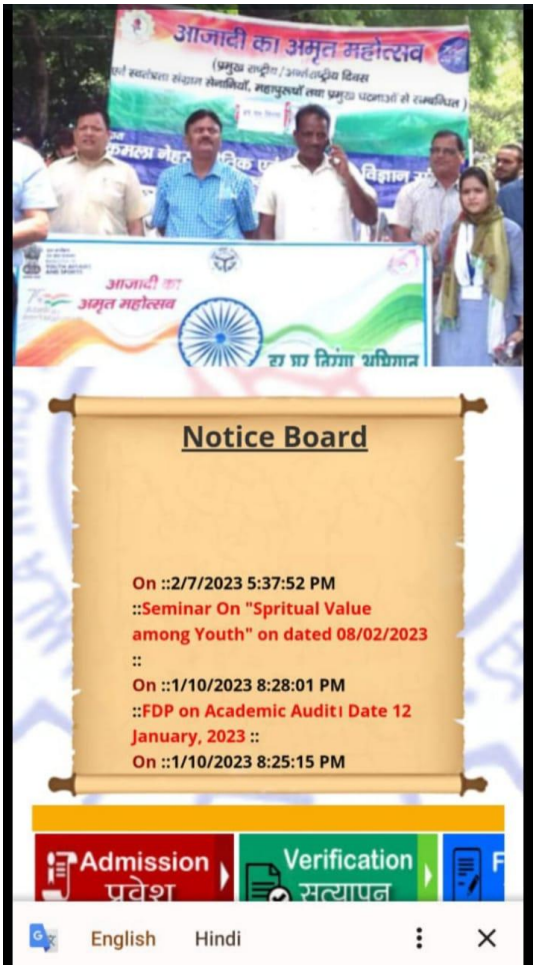

कमला नेहरू भौतिक एवं सामाजिक विज्ञान संस्थान, सुलतानपुर–228118

Kamla Nehru Institute of Physical & Social Sciences, Sultanpur-228118

सम्बद्धः डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या (उ0प्र0)

(विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की स्वायत्त संस्था नैक (NAAC) द्वारा 'A' श्रेणी में मूल्यांकित)

(Accredited in 'A' grade by NAAC)

Email_ID: principalknipss@gmail.com, Website: www.knipss.ac.in

☎ & Fax: 05362-240854
Mob.No.: 9415255398, 9984876699

सेवा में,

दिनांक– 07.02.2023

समस्त प्राचार्य/प्राचार्या,

अशासकीय महाविद्यालय, जनपद– सुलतानपुर

विषयः <u>छात्र हित में महाविद्यालय द्वारा आयोजित सेमिनार में छात्र–छात्राओं की प्रतिभागिता के सन्दर्भ में।</u>

महोदय,

निवेदन के साथ सूच्य है कि दिनांक 08.02.2023 प्रातः 10:00 बजे आर्यभट्ट हॉल में **"Spiritual values among youth"** विषय पर सेमिनार आयोजन प्रस्तावित है। मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. जे.पी. सिंह (एम.डी.), मेम्बर नेशरल कोर ग्रुप श्री अरविन्दो सोसाइटी पॉण्डीचेरी रहेंगे। आपके महाविद्यालय के छात्र/छात्राएं उक्त आयोजन में सादर आमंत्रित हैं। छात्रहित को दृष्टिगत रखते हुए प्रतिभागिता पूर्णतया निःशुल्क है।

सधन्यवाद!

प्राचार्य

प्रतिलिपि सेवा में सूचनार्थ प्रेषित–

1. समस्त प्राचार्य/प्राचार्या, अशासकीय महाविद्यालय, जनपद– सुलतानपुर
2. ब्यूरो चीफ, दैनिक जागरण/हिन्दुस्तान/अमर उजाला, सुलतानपुर।

प्राचार्य

आख्या सेमिनार आयोजन

दिनांक–08.02.2023

छात्रों में आध्यात्मिक मूल्य

आज दिनांक 08.02.2023 को संस्थान एक्टिविटी प्रकोष्ठ द्वारा छात्रहित में सेमिनार का आयोजन किया गया, जिसकी आख्या निम्नवत है।

कार्यक्रम में कुल 53 छात्र एवं छात्राओं ने प्रतिभाग किया। सर्वप्रथम मुख्य अतिथि डा. जे.पी. सिंह ने माँ सरस्वती एवं संस्थापक बाबू के.एन. सिंह प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलित किया। डॉ. जे.पी. सिंह (एम.डी.), श्री अरविन्द सोसाइटी पॉण्डिचेरी के राष्ट्रीय मूल समिति के सदस्य ने आध्यात्मिक मूल्यों विषय पर बोलते हुए कहा कि हमने सुख सुविधा के आयाम तो विकसित कर लिए हैं मगर खुशी की कमी है। सुलतानपुर में पहले मनोचिकित्सक नहीं थे आज दर्जनों हैं क्योंकि आवश्यकता है। सुख–सुविधा में निरन्तर वृद्धि हो रही है मगर खुशी प्रतिदिन घट रही है। हम जीवन को सम्पूर्णता मे नहीं देखते, एकांकी हो गये हैं। जहां एकांकी हो जाते हैं खुशी खत्म हो जाती है। विद्यार्थी के रूप में आप संस्थान, जनपद, घर–परिवार, समाज आदि में क्या तालमेल बैठा पाते हैं।

शिक्षा का उद्देश्य बहुतेरों के लिए प्रायः पैसा कमाना होता है। यह एकांकी उद्देश्य है जो कि ठीक नहीं है। हम जब पैसे को ही देखते हैं तो हमारे अहमं का शोषण होता है पोषण नहीं होता। आपने उद्बोधन में नयी पीढ़ी से कुछ सिद्धान्त साझा किये

प्रथम सिद्धान्त जीवन में तालमेल होना, द्वितीय सिद्धान्त शिक्षा का उद्देश्य नौकरी एवं व्यापार तक सीमित नहीं होना चाहिए। तृतीय सिद्धान्त–जीवन जीने की कला यह भगवद् गीता सिखाती है। यह शुरूआती जीवन से शुरू कर देना चाहिए, आपकी मनोवृत्तियां बदल जायेगी, आप विषम परिस्थितियों से लड़ने में सक्षम हो जायेंगे।

मुसीबतों को हमेशा एक अवसर के रूप में देखें। आपने ऋषिकेश में स्वामी श्री शिवानंद एवं भूतपूर्व राष्ट्रपति स्व0 अब्दुल कलाम आजाद के संवाद को भी साझा किया जब वह निराशा में थे। चतुर्थ सिद्धान्त जीवन में समता का भाव रखना चाहिए, विपरीतताओं को कोसे नहीं उन में अच्छाई ढूढ़े। विपरीत परिस्थति भी आपको ऊंचा उठाऐंगी। पंचम सिद्धान्त कभी किसी चीज पर आशक्त ना हो क्योंकि जीवन में प्रायः नजरिया बदलता रहता है। त्याग की भावना भी हमारे अन्दर होनी चाहिए, त्याग एक परिपक्वता की निशानी है। षष्टम आपके संस्कार एवं आपका आचरण अगली पीढ़ी में जायेगा इस बात का विशेष ध्यान रखें।

ऊर्जा का अवशोषण तीन प्रकार से होता है → भूतकाल को याद करते हुए
→ भविष्य की दुष्चिन्ता
→ आवेग में कार्य करते हुए

इन पर नियंत्रण करें कार्य की गुणवत्ता अच्छी हो जायेगी। भगवद् गीता का तीसरा श्लोक पढ़े। आपके संस्कार, आचरण अगली पीढ़ी में जायेंगे, ध्यान रखें। Ego centric होना मुख्य कारण है– खुशी का कम होना। प्रो. राधेश्याम सिंह अपने वक्तव्य में कहा कि आप भगवान का अंश हैं इसलिए यह मानते हुए कार्य करें कि भगवान ही स्वयं कार्य कर रहें और जब भगवान ही कार्य कर रहे है तो गलत होने का प्रश्न ही नहीं है।

मुख्य वक्ता ने छात्रों की समस्याओं एवं प्रश्नों का बड़ी सहजता से उत्तर भी दिया। आई.क्यू.ए.सी. (आन्तरिक गुणवत्ता निर्धारण प्रकोष्ठ) के निदेशक प्रो प्रवीण कुमार सिंह, अवध विश्वविद्यालय महाविद्यालय शिक्षक संघ अध्यक्ष प्रो विजय प्रताप सिंह,परीक्षा नियंत्रक प्रो बिहारी सिंह, वंदना सिंह, प्रो ओम प्रकाश सिंह, सुनीता राय, शक्ति सिंह, , डॉ आर.पी. मिश्र–मीडिया प्रभारी, राहुल भारती, अजीत कुमार यादव आदि लोग उपस्थित रहे।

(प्रो. प्रवीण कुमार सिंह)
निदेशक–आई.क्यू.ए.सी.
के.एन.आई.पी.एस.एस.
सुलतानपुर

7/8

के एन आई में सेमिनार का हुआ आयोजन

वॉयस ऑफ अमेठी

सुल्तानपुर। कमला नेहरू भौतिक एवं सामाजिक विज्ञान संस्थान, सुलतानपुर (उ.प्र.), के ऐक्टिविटी प्रकोष्ठ द्वारा आज दिनांक 08 फरवरी 2023 को छात्र एवं छात्राओं के लिए एक दिवसीय सेमिनार का आयोजन किया गया। यह सेमिनार छात्रों में आध्यात्मिक मूल्यों की उपयोगिता विषय पर आधारित, संस्थान के अम्बेडकर हाल में सम्पादित हुआ।कमला नेहरू संस्थान में सक्रिय, एक्टिविटी प्रकोष्ठ की संयोजिका रंजना सिंह नें कार्यक्रम का नेतृत्व किया व डॉ. जे.पी. सिंह (एम.डी.), श्री अरविन्द सोसाइटी पॉण्डिचेरी के राष्ट्रीय मूल समिति के सदस्य बतौर मुख्य वक्ता सेमिनार को सम्बोधित किए। विषय पर उद्बोधन देते हुए डॉ? जे पी सिंह नें कहा कि हमने सुख सुविधा के आयाम तो विकसित कर लिए हैं मगर खुशी की कमी है। एक तथ्य का जिक्र करते हुए इन्होंने बताया कि सुलतानपुर में पहले मनोचिकित्सक नहीं थे लेकिन आज दर्जनों है कारण इनकी आवश्यकता है। सुख-सुविधा में निरन्तर वृद्धि हो रही है मगर खुशी प्रतिदिन घट रही है। हम जीवन को सम्पूर्णता मे नहीं देखते वरन् एकांकी हो गये है।जहां एकांकी हो जाते है खुशी वहीं खत्म हो जाती है।डॉ? सिंह नें विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि विद्यार्थी के रूप में क्या आप संस्थान, जनपद, घर-परिवार व समाज आदि में तालमेल बैठा पाते है। इन्होंने कहा कि शिक्षा का उद्देश्य प्रायः पैसा कमाना नहीं होता । यह तो एकांकी उद्देश्य है जो कि जीवन में ठीक नहीं है। हम जब पैसे को ही देखते हैं तो हमारे अहमं का शोषण होता है बल्कि पोषण नहीं होता। डॉ? जे पी सिंह अपने उद्बोधन के दौरान नयी पीढ़ी से आध्यात्मिक मूल्य के षष्ठ सिद्धान्तों को साझा किये। इन्होंने बताया कि मूल्य के विविध षष्ठ सैद्धांतिक पक्षों में प्रथम सिद्धान्त जीवन में तालमेल का होना,द्वितीय सिद्धान्त शिक्षा का उद्देश्य नौकरी एवं व्यापार तक ही सीमित न होना तथा तृतीय सिद्धान्त जीवन जीने की कला का होना है।सेमिनार में बल देकर इन्होंने कहा कि हमें जीवन जीने की कला श्री भगवद् गीता सिखाती है। आध्यात्मिक मूल्यों के सही विकास हेतु डॉ? सिंह ने कहा कि आध्यात्मिक मूल्य आधारित कर्तव्य शुरूआती दिनों से शुरू कर देना चाहिए जिससे मनोवृत्तियां बदल जायेगी व व्यक्ति विषम परिस्थितियों से लड़ने में सक्षम हो जाएगा।इन्होंने इसी क्रम में बताया कि छात्र छात्राएं मुसीबतों को हमेशा एक अवसर के रूप में देखें। सेमिनार में इनके द्वारा ऋषिकेश में स्वामी श्री शिवानंद एवं भूतपूर्व माननीय राष्ट्रपति स्व0 अब्दुल कलाम के संवाद को भी साझा किया गया।इसी क्रम में जीवन के चतुर्थ सिद्धान्त का जिक्र करते हुए इन्होंने कहा कि जीवन में समता का भाव रखना चाहिए व विपरीतताओं को कोसे नहीं बल्कि उन में अच्छाई ढूंढे क्योंकि विपरीत परिस्थितियाँ भी आपको ऊंचा उठाऐंगी। पंचम सिद्धान्त के बारे में इन्होंने सेमिनार में उपस्थित लोगों को सम्बोधित करते हुए कहा कि मानव कभी किसी चीज पर आशक्त ना हो क्योंकि जीवन में प्रायः नजरिया बदलता रहता है। त्याग की भावना भी हमारे अन्दर होनी चाहिए क्योंकि त्याग एक परिपक्वता की निशानी है।

7/8

के एन आई में सेमिनार का हुआ आयोजन

वॉयस ऑफ अमेठी

सुल्तानपुर। कमला नेहरू भौतिक एवं सामाजिक विज्ञान संस्थान, सुलतानपुर (उ.प्र.), के ऐक्टिविटी प्रकोष्ठ द्वारा आज दिनांक 08 फरवरी 2023 को छात्र एवं छात्राओं के लिए एक दिवसीय सेमिनार का आयोजन किया गया। यह सेमिनार छात्रों में आध्यात्मिक मूल्यों की उपयोगिता विषय पर आधारित, संस्थान के अम्बेडकर हाल में सम्पादित हुआ।कमला नेहरू संस्थान में सक्रिय, एक्टिविटी प्रकोष्ठ की संयोजिका रंजना सिंह नें कार्यक्रम का नेतृत्व किया व डॉ. जे.पी. सिंह (एम.डी.), श्री अरविन्द सोसाइटी पॉण्डिचेरी के राष्ट्रीय मूल समिति के सदस्य बतौर मुख्य वक्ता सेमिनार को सम्बोधित किए। विषय पर उद्बोधन देते हुए डॉ? जे पी सिंह नें कहा कि हमने सुख सुविधा के आयाम तो विकसित कर लिए हैं मगर खुशी की कमी है। एक तथ्य का जिक्र करते हुए इन्होंने बताया कि सुलतानपुर में पहले मनोचिकित्सक नहीं थे लेकिन आज दर्जनों है कारण इनकी आवश्यकता है। सुख-सुविधा में निरन्तर वृद्धि हो रही है मगर खुशी प्रतिदिन घट रही है। हम जीवन को सम्पूर्णता मे नहीं देखते वरन् एकांकी हो गये है।जहां एकांकी हो जाते है खुशी वहीं खत्म हो जाती है।डॉ? सिंह नें विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि विद्यार्थी के रूप में क्या आप संस्थान, जनपद, घर-परिवार व समाज आदि में तालमेल बैठा पाते है। इन्होंने कहा कि शिक्षा का उद्देश्य प्रायः पैसा कमाना नहीं होता । यह तो एकांकी उद्देश्य है जो कि जीवन में ठीक नहीं है। हम जब पैसे को ही देखते हैं तो हमारे अहमं का शोषण होता है बल्कि पोषण नहीं होता। डॉ? जे पी सिंह अपने उद्बोधन के दौरान नयी पीढ़ी से आध्यात्मिक मूल्य के षष्ठ सिद्धान्तों को साझा किये। इन्होंने बताया कि मूल्य के विविध षष्ठ सैद्धांतिक पक्षों में प्रथम सिद्धान्त जीवन में तालमेल का होना,द्वितीय सिद्धान्त शिक्षा का उद्देश्य नौकरी एवं व्यापार तक ही सीमित न होना तथा तृतीय सिद्धान्त जीवन जीने की कला का होना है।सेमिनार में बल देकर इन्होंने कहा कि हमें जीवन जीने की कला श्री भगवद् गीता सिखाती है। आध्यात्मिक मूल्यों के सही विकास हेतु डॉ? सिंह ने कहा कि आध्यात्मिक मूल्य आधारित कर्तव्य शुरूआती दिनों से शुरू कर देना चाहिए जिससे मनोवृत्तियां बदल जायेगी व व्यक्ति विषम परिस्थितियों से लड़ने में सक्षम हो जाएगा।इन्होंने इसी क्रम में बताया कि छात्र छात्राएं मुसीबतों को हमेशा एक अवसर के रूप में देखें। सेमिनार में इनके द्वारा ऋषिकेश में स्वामी श्री शिवानंद एवं भूतपूर्व माननीय राष्ट्रपति स्व0 अब्दुल कलाम के संवाद को भी साझा किया गया।इसी क्रम में जीवन के चतुर्थ सिद्धान्त का जिक्र करते हुए इन्होंने कहा कि जीवन में समता का भाव रखना चाहिए व विपरीतताओं को कोसे नहीं बल्कि उन में अच्छाई ढूंढे क्योंकि विपरीत परिस्थितियाँ भी आपको ऊंचा उठाऐंगी। पंचम सिद्धान्त के बारे में इन्होंने सेमिनार में उपस्थित लोगों को सम्बोधित करते हुए कहा कि मानव कभी किसी चीज पर आशक्त ना हो क्योंकि जीवन में प्रायः नजरिया बदलता रहता है। त्याग की भावना भी हमारे अन्दर होनी चाहिए क्योंकि त्याग एक परिपक्वता की निशानी है।